International Journal of Applied Research 2015; 1(10): 253-255

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(10): 253-255
www.allresearchjournal.com
Received: 12-07-2015
Accepted: 13-08-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हिप्र

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हिप्र

अर्थ परिवर्तन और भाषा विकास

डॉ. शिवदत्त शर्मा

भाषा सदैव परिवर्तन शील होती है। ये परिवर्तन प्रायः सहज ही होते हैं। कई बार ये परिवर्तन इतनी तेजी और निरन्तरता में होते हैं कि हुए परिवर्तन की ओर ध्यान ही नहीं जाता और गहन समीक्षा के बाद ही परिवर्तन का अहसास होता है। यह परिवर्तन ही भाषा को जीवन्त बनाए रखता है। सन्त कबीर भाषा को बहता नीर कहते थे।[1] सत्य है भाषामें होने वाला निरन्तर परिवर्तन उसके विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। अनायास परिवर्तन इस लिए भी सम्भव है क्योंकि लोकव्यवहार में शब्दों के विकृत प्रयोग से धीरे धीरे विकृत शब्द ही सही शब्द का स्थान ले कर सही शब्द को अपंग बना देते हैं।[2] इसतरह प्रत्येक भाषा के शब्दों में निरन्तर अर्थ परिवर्तन की क्रिया चलती रहती है। क्योंकि शब्द का प्रयोग करने वाले वक्ता एवं लेखक मनमाने ढंग से अर्थ लगााने लगते हैं और धीरे–धीरे एक परम्परा सी बन जाती है तथा शब्द का उन्हीं अर्थों में प्रचलन हो जाता है तथा वही अर्थ रूढ हो कर व्यवहार में प्रयुक्त होने लगता है। इसके एक नहीं अनेक कारण हैं जिनका विवरण इस प्रकार है–

1 बल का अपसरण– यह प्रायः देखा जाता है कि किसी शब्दके उच्चारण में यदि केवल एक ध्वनि पर बल देने लगें तो धीरे धीरे शेष ध्वनियां लुप्त हो जाती हैं। इसी को बल का अपसरण कहते हैं। सामाजिक व्यवहार में अनेक शब्द इस प्रकार के मिलेंगे जो बडी सुगमता से भाषा में स्थापित हो चुके हैं। कुछ उदाहरण इस तथ्य की पुष्टि करते हैं–
उपाध्याय शब्द बल का अपसरण होने के कारण झा ही रह गया है कुत्रचित इसे ठेठ क्षेत्रीय भाषाओं में बल अपसरण के कारण पाधा भी बोला जाता है।[3]

2 पीढी परिवर्तन– मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह जिस समाज में रहता है उसी के अनुसार भाषा का प्रयोग करता है। किसी भी समाज की एक पीढी में कोई शब्द पहले जिस अर्थ में प्रयुक्त होता है वह सदैव उसी अर्थ में प्रयुक्त नहीं होता । पीढी के परिवर्तन होते ही जहां अन्य बहुत से परिवर्तन होते हैं वहां भाषा के शब्दों एवं अनेक अर्थों में भी परिवर्तन होने लगते हैं और अनेक रूढ अर्थ भिन्न अर्थ ग्रहण कर लेते है तथा पुराने अर्थ प्रायः लुप्त हो जाते हैं।[4] इस संदर्भ में निम्नलिखित उदाहरण द्रष्टव्य हैं–
भोजपत्र पर लिखने की परम्परा पर्याप्त प्रचलित रही है। भोजपत्र पर लिखने के कारण पत्रव्यवहार का माध्यम भोज वृक्ष का पत्ता रहा जबकि आगे चल कर कागज का अविष्कार होने के पश्चात कागज ही पत्र के रूप मे रूढ हो गया तथा पत्ते के समान पतली वस्तुए भी पत्ता कहलाने लग पडीं जैसे–स्वर्ण पत्र चांदी के पत्र यहां तक की आजकल तो समाचार–पत्र को भी पत्र कहा जाता है।

3 विभाषा से शब्दों का उधार लेना– भाषा में कई तरह के परिवर्तन देखने को मिलते हैं। भाषा में कुछ शब्दों के अर्थ उस समय भी बदल जाते हैं जिस समय एक भाषा का शब्द दूसरी भाषा में काम चलाने के लिए उधार लिया जाता है। ऐसी अवस्था में शब्द का शरीर तो दूसरी भाषा में आ जाता है किन्तु उसकी आत्मा मूल भाषा में ही रह जाती है और अर्थ परिवर्तन के साथ उन शब्दों का प्रयोग होने लगता है। उर्दु फारसी का दरिया शब्द गुजराती में नदी के स्थान पर समुद्र के रूप मे प्रयुक्त होने लगा। अंग्रेजीका ग्लास कांच शब्द हिन्दी में आकर गिलास पीने का पात्र के रूप में प्रयुक्त होता आ रहा है। इसी तरह संस्कृत भाषा का वर श्रेष्ठ का अर्थ हिन्दी में आकर दूल्हा के लिए प्रयुक्त होने लगा है। इस तरह किसी दूसरी भाषा से उधार लिए शब्द भी जब भिन्न अर्थ में किसी अन्य भाषा में प्रयुक्त होते हैं तो भाषा के अन्दर अर्थपरिवर्तन होता है।[5]

4 समान भाषाभाषियों का विखरना– जब एक समान भाषा बोलने वाले लोगों का समूह कई वर्गों में विकसित होने लगता है और अन्त में अलग अलग वर्ग बन जाते हैं तो उन विभिन्न वर्गों में एक ही शब्द भिन्न भिन्न अर्थ देने लगता हैं। इसके पीछे उन लोगों का पृथक पृथक विकास कार्य करता है। उदाहरणस्वरूप संस्कृत के नील शब्द को लिया जा सकता है। नील या नीला शब्द गुजराती में लीलो हेा गया है तथा भिन्न अर्थ में भी प्रयुक्त होता है।

5 वातावरण में परिवर्तन–भाषा में वातावरण का परिवर्तन भी अर्थ परिवंर्तन में मुख्य भूमिका निभाता है। कुछ शब्द वातावरण और क्षेत्र बदल जाने के उपरान्त अपना वास्तविक अर्थ बदल लेते हैं। इस तरह अपने मूल अर्थ से भिन्न अर्थ को ग्रहण कर लेते हैं।भौगोलिक वातावरण के अतिरिक्त सामाजिक परिवर्तन भी इस में महत्व पूर्ण भूमिका निभाता है। वातावरण और सामाजिक परिवर्तन के कारण भाषा में अनेक परिवर्तन दिखाई देते हैं। सम्भवतः भाषा में सर्वाधिक अर्थ परिवर्तन का कारण यही घटक है। कुछ उदाहरण देखिए–

क भौगोलिक वातावरण

ठाकुर शब्द उत्तर प्रदेश में क्षत्रिय के लिए व्यवहृत होता है जबकि बिहार में नाई के लिए और बंगाल में रसोइये का बोधक है। ऋग् वेद में उष्ट्र शब्द भैंसे का वाचक था परन्तु बाद में उंट के लिए प्रयुक्त होने लगा।

ख सामाजिक वातावरण– अंग्रेजी का सिस्टर शब्द सामाजिक वातावरण के कारण अर्थ परिवर्तन का अच्छा उदाहरण है। घर में सिस्टर बहिन की वाचक है जबकि अस्पताल में इसका अर्थ है नर्स।[6]

उसी तरह डॉक्टर वैद्य हकीम कविराज यद्यपि समानार्थी शब्द हैं किन्तु सामाजिक परिवेश के कारण इस शब्द का अर्थ एवं व्यवहार भिन्न भिन्न है।

ग प्रथा का प्रचलन सम्बन्धी वातावरण– प्रथा अथवा प्रचलन के कारण भी शब्दों के अर्थ परिवर्तन हो जाते हैं। उदाहरण स्वरूप संस्कृत के वर शब्द को लिया जा सकता है। वर का मौलिक अर्थ श्रेष्ठ था बाद में वर–दूल्हे के रूप में प्रतिष्ठित हो गया और उससे ही वरण जैसा शब्द भी चुनने के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा।

6 नम्रता एवं सभ्यता प्रदर्शन–लोक व्यवहार में अतिशय नम्रता प्रदर्शन में भी जिस भाषा और शब्दों का प्रयोग होता है वह भी अर्थ परिवर्तन में महत्व पूर्ण भूमिका निभाता है। नम्रता एवं सभ्यता आदि प्रदर्शन के लिए मनुष्य शब्दों उका कुछ इस तरह प्रयोग करने लगा है कि मूल शब्द का मौलिक अर्थ ही तिरोहित हो गया है तथा उस बदले हुए अर्थ को ही जनसाधारण व्यवहार में लाने लगा है। उदाहरण के लिए कुछ शब्द उद्धृत हैं–

किसी का पता पूछने के लिए नम्रता और सभ्यता अथवा शिष्टाचार का प्रदर्शन करते हुए सामान्य व्यक्ति आपका दौलत खाना कहां है कहता है जबकि दौलत खाना शब्द का मूल अर्थ भंण्डार आदि है परन्तु आजकल साधारण व्यक्ति भी घर के अर्थ में इसका प्रयोग करता मिल जाएगा। इसी तरह आपकी तारीफ का मतलव आपकी प्रशंसा न होकर आपका परिचय है। इसीतरह खाकसार जहांपनाह अन्नदाता आलमपनाह आदि शब्द अपने मूल अर्थ से दूर चले गए हैं तथा अतिशय नम्रता अथवा शिष्टता के कारण नए अर्थ में प्रयुक्त होने लगे हैं।

7 अशोभन के स्थान पर शोभन भाषा का प्रयोग– काव्य शास्त्र के अनुसार भाषा मे दोषों को स्थान नहीं है। अन्य दोषों के अतिरिक्त भाषा में अशिष्ट एवं अश्लील शब्दों का प्रयोग वर्जित है। इसी प्रयास में भाषा में अर्थ परिवर्तन होना स्वाभाविक है। इस तरह के अनेक उदाहरण भाषा में सरलता से मिल जाते हैं। विधवा होने पर तकदीर बिगडना सुहाग लुटना के लिए सुहाग धुलना आदि का प्रयोग आम देखा जा सकता है। इसी तरह लाश को मनुष्य मिट्टी कहता है तथा अनिष्ट से बचने के लिए दुकान बन्द करने की जगह दुकान बढाना एवं दीपक बुझाने का जगह दीपक बढाना कहने की परम्परा हो गई है। इसी तरह अश्लीलत्व से बचनके लिए प्रतीकात्मक शब्दों का प्रयोग भी देखा जा सकता है। मलमूत्र त्याग शौच आदि के लिए कमशः लघुशंका एवं दीर्घशंका आदि का प्रयोग एक सामान्य भाषा के रूप मे देखा जा सकता है।[7]

8 अन्ध विश्वास – यह देखा गया है कि अर्थपरिवर्तन का एक प्रमुख कारण अन्धविश्वास भी है। अन्ध विश्वास के कारण ही अनेक शब्द भिन्न अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। बच्चे को चेचक निकलने पर भय के कारण अथवा अन्धविश्वास के कारण लोग चेचक को माता या शीतला माता कहते हैं। इसी तरह सांप के निकलने पर नाग देवता कहने की परम्परा है। इस प्रकार अन्धविश्वास जनित कारण भी अर्थ परिवर्तन में बडी भूमिका निभाते हैं।

9 प्रयत्न लाघव– प्रयत्न लाघव की प्रवृत्ति अर्थ परिवर्तन के क्षेत्र में भी देखी जा सकती है। कालान्तर में लोग अधिक शब्दों वाले अधिष्ठानों अथवा वस्तुओं को कम शब्दों से ही बोलने लगते हैं। उदाहरणस्वरूप प्रारम्भ में भाप इंजन से लोहपटरी पर चलने वाली गाडी का नाम रेलगाडी था किन्तु अब केवल रेल शब्द से ही काम चला लिया जाता है। इसी तरह रेलगाडी के विराम स्थल को रेलवे स्टेशन कहा जाता हैकिन्तु लोग स्टेशन अथवा टेशन से ही पूर्ण अर्थ का काम चला लेते हैं। मोटर कार में भी मोटर शब्द लुप्त हो गया है तथा केवल कार शब्द से ही काम चला लिया जाता है। यह सब प्रयत्न लाघव के कारण ही तो है।[8]

10 भावात्मक बल– भाषा में भावात्मक अतिरेक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भावों की अतिशयता ही कभी कभी अर्थ परिवर्तन कर देती है। उदाहरणतः किसी की हंसी की अतिशय प्रशंसा करने के लिए कह दिया जाता है–तुम्हारी हंसी जान लेवा है। इसी तरह कुछ मुहावरे एवं लोकोक्तियां भावातिरेक में भाषाके साधारण अर्थ में आमूलचूल परिवर्तन ला देतीं हैं। कलेजा मुंह को आना लार टपकना आदि प्रयोग भाषा के अर्थ परिवर्तन में उल्लेखनीय भूमिका निभाते हैं।

11 व्यंग्यके कारण– भाषा में अर्थपरिवर्तन के कारण अनेक घटक हैं। व्यंग्य के कारण भी कभीकभी अर्थ परिवर्तन सम्भव होता है। व्यंग्य अथवा उपहास में मूर्खके लिए वृहस्पति और कंजूस के लिए कर्ण एवं सीधे व्यक्ति के लिए गधा कह दिया जाता हैं। धीरे धीरे यह भाषा में अर्थपरिवर्तन करने में उल्लेखनीय योगदान देते हैं।

12 अज्ञानता या भ्रान्ति– अज्ञानता या भ्रांति वश भी व्यवहार में कुछ शब्द आ जाने पर अर्थपरिवर्तन में सहायक होते हैं। ऐसे शब्द भाषा में घुलमिल कर अर्थपरिवर्तन में आशातीत परिवर्तन ला देते है। उदाहरणस्वरूप अनभिज्ञता के कारण कुछ लोग अनुपयुक्त शब्दों का प्रयोग करते हैं और कालान्तर में धीरेधीरे सही शब्द की जगह अशुद्ध शब्द ले लेते हैं तथा अर्थ में भी परिवर्तन हो जाताहै। फिजूल शब्द व्यर्थ का पर्याय है जबकि इस की जगह बेफिजूल शब्द का प्रयोग धडल्ले से होने लगा है यानि शुद्ध की जगह अशुद्ध शब्द का प्रयोग आम बातं है। कई भाषण के अन्त में आभार प्रकट करने के स्थान पर श्रद्धांजलि अर्पित कर देते हैं ऐसे उदाहरण भाषा में अर्थ परिवर्तन में सहायक होते हैं।

13 शब्द के अर्थ में एक ही तत्व की प्रमुखता– कभी कभी शब्द के पूर्ण अर्थ को ध्यान में न रखकर एक ही तत्व के आधार पर

उसी को प्रमुखता प्रदान करते हुए अर्थ प्रसिद्ध हो जाता है। लालपगडी का अर्थ है लाल पगडीवाला अर्थात पुलिस वाला क्योंकि पुलिस की पहले लाल पगडी हुआ करती थी अतः लाल पगडी का सांकेतिक अर्थ पुलिस के लिए रूढ हो गया।ऐसे ही सुन्दर रंग के कारण सोने को सुवर्ण कहा जाने लगा।[9]

14 स्थानगत विशेष अर्थ– कई बार विशेष स्थान पर एक विशेष अर्थ भी भाषा मे देखा जाता है। ऐसा विशेष अर्थ अन्यत्र व्यवहार में नहीं होगा। उदाहरणतः इलाहाबाद में सम्मेलन का अर्थ हिन्दी साहित्य सम्मेलन है किन्तु अन्यत्र इसका ाअर्थ भिन्न होगा। वाराणसी में सभा का अर्थ लोग काशी नागरी प्रचारिणी सभा ही समझते हैं जंबकि दक्षिण में इसका अर्थ दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा समझा जाएगा परन्तु अन्य संदर्भो में इसका इनसे भिन्न अर्थ होगा।

15 शब्दों के भिन्न– भिन्न रूपों का विभिन्न अर्थों में प्रयोग–लोकव्यवहार मे कई बार ऐसे शब्द भी देखने को मिलते हैं जिनके तत्सम और तद्भव रूपो में पर्याप्त वैषम्य हो जाता है जबकि देखने में शब्द समान से लगते हैं यथा– भद्र–भद्दा श्रेष्ठ–सेठ खाद्य–खाद क्षीर–खीर स्तन–थन पत्र–पत्ता आदि।

16 शब्दों का रूढ अर्थ में प्रयोग– अनेक शब्द अपने रूढ अर्थ के कारण उसी नाम से प्रसिद्ध हो जाते हैं। उदाहरणतः विदेशों से आकर पहली बार जब तम्बाकू सूरत बन्दरगाह पर आकर उतरा तभी से आज तक उसका सम्पूर्ण भारत में प्रचार– प्रसार और उत्पादन होने लगा किन्तु आज तक तम्बाकू का एक नाम सूरती प्रसिद्ध है।

सिन्धु के सहचर्य वश नमक को सैन्धव कहा जाता है। चीन के सहचर्यवश शक्कर का नाम चीनी इसी प्रवृत्ति के कारण पडा।

संक्षेप में कह सकते हैं कि अर्थपरिवर्तन के उपरि उक्त के अतिरिक्त भी अनेक कारण होते हैं। इनमें नवनिर्माण का आग्रह भी बहुत प्रमुख कारण है। नूतन आविष्कारों और प्रयोगों के कारण इस प्रकार के अर्थ परिवर्तन देखे जाते हैं। प्रारम्भिक काल में लेखनी मयूरादि के पंख से बनाई जाती थी। पंख को अंग्रेजी में पिन्ना कहते हैं जो कालान्तर में पेन के रूप में विकसित हो कर प्रत्येक प्रकार की लेखनी के लिए व्यवहृत होने लगा। [10]

विज्ञान गणित इंजीनियरिंग आदि के क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दों की आज बाढ सी आ गई है। इसी प्रकार अनेक कारणों से अनवरत अर्थ परिवर्तन होता है और यह प्रक्रिया अनवरत चलती रहेगी।

संदर्भ सूचि

1. कबीर डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी पृ 37
2. भाषा संस्कृति और लोक दयानिधि मिश्र पृ 64
3. भाषा की संरचना डॉ भोला नाथ तिवारी पृ 34
4. समाज भाषा विज्ञान की भूमिका श्री तेज पाल चौधरी पृ 97
5. हिन्दी भाषा का इतिहास डॉ् भोला नाथ तिवारी पृ 70
6. भाषा विज्ञान डॉ भोला नाथ तिवारी पृ 113
7. भाषा की भीतरी परतें सं ऋृषभ देव शर्मा पृ 68
8. अर्थ विज्ञान व्रज मोहन पृ 37
9. भाषा विज्ञान की भूमिका देवेन्द्र नाथ शर्मा पृ 114
10. हिन्दी भाषा अतीत से आज तक विजय अग्रवाल पृ 84